माइकोराइज़ल कवक संरक्षण

[स्रोत: डाउन टू अर्थ]

सोसाइटी फॉर द प्रोटेक्शन ऑफ अंडरग्राउंड नेटवर्क्स (SPUN) ने **अंडरग्राउंड एटलस** लॉन्च किया है, जो दर्शाता है कि माइकोराइज़ल कवक के 90% से अधिक हॉटस्पॉट संरक्षित क्षेत्रों के बाहर हैं। यह महत्त्वपूर्ण है क्योंकि माइकोराइज़ल कवक **पोषक तत्त्वों के चक्रण और** कार्बन पृथक्करण में एक अहम भूमिका निभाते हैं।

- **पारिस्थितिकी तंत्र में भूमिका: माइकोराइज़ल कवक 80% से अधिक पौधों के साथ सहजीवी संबंध** बनाते हैं, **फास्फोरस जैसे पोषक तत्त्वों के अवशोषण में सहायता** करते हैं और पौधों की जड़ों से **CO2** का उपयोग करके कार्बन पृथक्करण में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।
  - वे प्रतिवर्ष लगभग **13 बिलियन टन CO2 या वैश्विक जीवाश्म ईंधन** उत्सर्जन का एक तिहाई संग्रहित करते हैं।
- **माइकोराइज़ल कवक के प्रकार:**
  - **AM (आर्बुस्कुलर माइकोराइज़ल) कवक:** ये कवक पौधों की जड़ की कोशिकाओं में प्रवेश करते हैं और मुख्य रूप से फसलों और घास के पौधों में पाए जाते हैं।
    - **हॉटस्पॉट: ब्राज़ीलियाई सेराडो, दक्षिण पूर्व एशिया, पश्चिम अफ्रीका**
  - **EcM (एक्टोमाइकोराइजा) कवक:** ये कवक पौधों की जड़ों के चारों ओर लिपटे रहते हैं और मुख्य रूप से **वन वृक्षों** जैसे **ओक (Oak)** और **पाइन (Pine)** में पाए जाते हैं।
    - **हॉटस्पॉट:** कनाडा, साइबेरिया, मध्य यूरोप, पश्चिमी अमेरिका।
- कवक और अन्य मृदा जीवों के पारिस्थितिक महत्त्व को पहचानते हुए, FAO ने कनाडा में जैव विविधता पर कन्वेंशन (CBD) के **COP15** बैठक में वैश्विक मृदा जैव विविधता वेधशाला (GLOBSOB) लॉन्च की, जो मृदा जीवन की निगरानी, सुरक्षा और पर्यावरण नीति में एकीकरण के लिए एक वैश्विक प्रयास है।

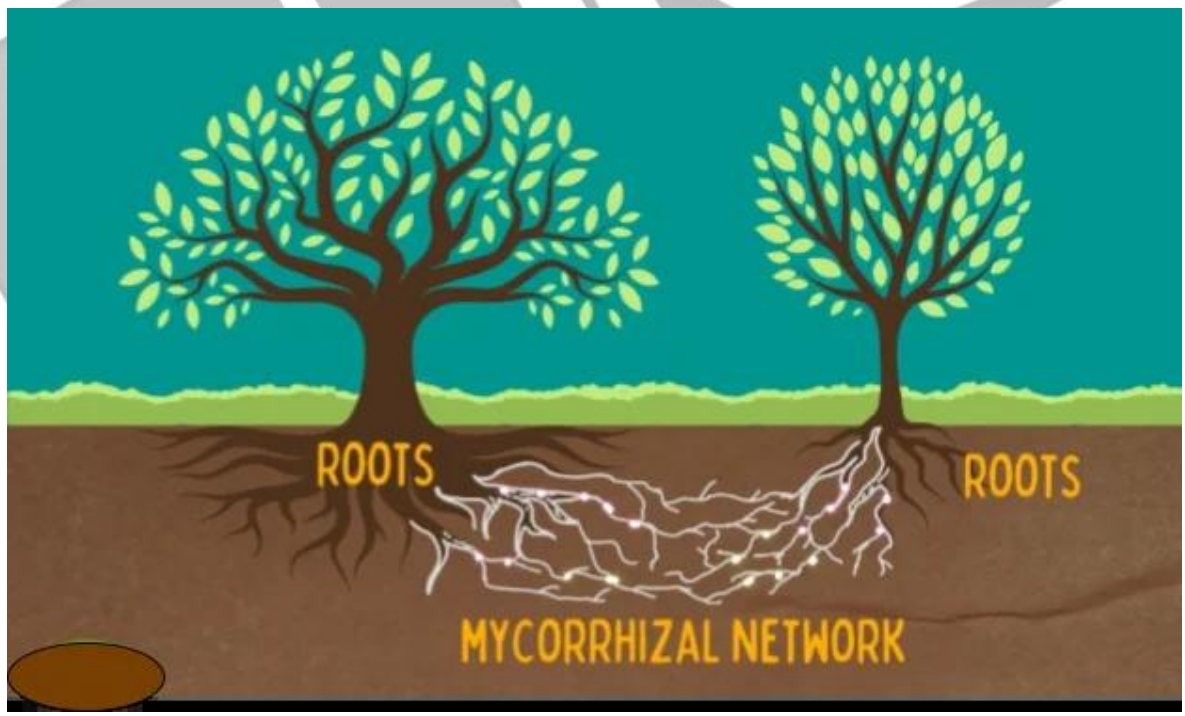

और पढ़ें: फ्लोरा फौना और 'फंगा'

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/spun-atlas-highlights-gaps-in-mycorrhizal-fungi-conservation